154

NEHRU MEMORIAL MUSEUM AND LIBRARY
ORAL HISTORY TRANSCRIPT

Shri Chandra Bhanu Gupta

154

154

NEHRU MEMORIAL MUSEUM & LIBRARY
TEEN MURTI HOUSE, NEW DELHI-11. TELEPHONES : 375026, 375197 GRAMS : NEHRUMUSUM

154

मौखिक इतिहास विभाग

घोषणा

मैं इस बात से सहमत हूं कि नेहरु स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी के मौखिक इतिहास विभाग के लिये मैंने जो सामग्री रिकार्ड कराई है उसका उपयोग ऐतिहासिक शोध या ऐतिहासिक ज्ञान के प्रसार के लिए नेहरु स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी जैसे चाहे उस रूप में किया जा सकता है, जैसे उनके द्वारा या उसका उपयोग करने वाले शोध छात्रों द्वारा उसका प्रकाशन और प्रसारण ।

नेहरु स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी जिन स्थानों पर इसे शोध के लिए दे वहां इस प्रतिलेख को पढ़ा जा सकता है । नेहरु स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी के निदेशक (डायरेक्टर) की लिखित अनुमति से ही इस प्रतिलेख से उद्धरण या अवतरण दिये जा सकते हैं ।

इस प्रतिलेख की पूरी या इसके किसी अंश की दूसरी नकल किसी भी रूप में नेहरु संग्रहालय और लाइब्रेरी के सिवा कोई दूसरा नहीं बना सकता ।

हस्ताक्षर -- चन्द्रभानु गुप्त -------

तारीख ---- 19-9-73 --------

प्राक्कथन

1 - प्रतिलेख के साहित्यिक सम्पत्ति अधिकार श्री चन्द्रभानु गुप्त ने नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी को दे दिये हैं । इस इन्टरव्यू के शोध में इस्तेमाल करने में आसानी हो इस दृष्टि से यह निर्णय किया गया है कि जो व्यक्ति इस प्रतिलेख में से छोटे उद्धरण प्रकाशित करना चाहते हैं उन्हें श्री चन्द्रभानु गुप्त या नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं हैं । वैसे 'छोटे उद्धरण' की बिल्कुल सही परिभाषा देना असंभव है, तो भी समझना चाहिए कि प्रकाशित उद्धरण उतना लम्बा हो सकता है जितना कापीराइट कानून के अनुसार सामग्री के 'उचित उपयोग' की परिभाषा के अन्तर्गत साधारण रूप से आता है ।

2 - नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी के निदेशक की अनुमति के बिना इस प्रतिलेख की किसी भी तरह दूसरी नकल न की जाय ।

3 - इस प्रतिलेख को दूसरी किसी लाइब्रेरी में जमा नहीं किया जा सकता या उस व्यक्ति के सिवा इसका उपयोग कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सकता जिसे नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी ने इसे दिया है ।

4 - इस प्रतिलेख के बड़े भाग को उद्धृत करने के लिए नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी के निदेशक की अनुमति लेनी जरूरी है ।

5 - प्रतिलेख में से उद्धरण का उल्लेख इस तरह से किया जाना चाहिये ;

श्री चन्द्रभानु गुप्त का इन्टरव्यू
श्याम लाल मनचंदा ने रिकार्ड किया, तिथि, पृष्ठ
नेहरू स्मारक संग्रहालय और लाइब्रेरी
मौखिक इतिहास विभाग

जीवन-परिचय

चन्द्रभानु गुप्त : जन्म: बिजोली जिला अलीगढ़ में 14 जुलाई 1902 को हुआ ; सन् 1916 में कांग्रेस के सदस्य बने ; सन् पचीस में वकालत शुरू की ; सन् 1926 से उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे हैं ; लखनऊ विश्वविद्यालय के कोर्ट और कौंसिल के 1929 से 1959 तक मेम्बर; 1959 में उसके उप-अध्यक्ष और 1960 में अध्यक्ष थे ; सन् 1937 में यू0पी0 विधान सभा के सदस्य चुने गये ; यू0पी0 में कांग्रेस समाजवादी दल के नेता रहे ; 1946 में मुख्य मंत्री के सचिव रहे ; 1947-50 तक यू0पी0 सरकार में मंत्री थे ; सन् 1960-63, सन् 67 और 1969-70 में यू0पी0 के मुख्य मंत्री रहे ; इस समय संगठन कांग्रेस के यू0पी0 में नेता हैं ।

प्रतिलेख के मुख्य-विषय

जवाहरलाल नेहरू के संस्मरण ; 'इन्डिपेन्डेन्स आफ इंडिया लीग' ; कांग्रेस अधिवेशन 1929 ; पूर्ण स्वराज, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष बोस ; जवाहरलाल नेहरू की समाजवादी विचारधारा और चन्द्रभानु गुप्त ; कांग्रेस समाजवादी दल और जवाहरलाल नेहरू ; गांधी, सुभाष बोस और जवाहरलाल नेहरू ; कांग्रेस समाजवादी दल का कांग्रेस पर प्रभाव ; कांग्रेस समाजवादी दल और 1937 में सत्ता स्वीकार करने का प्रश्न ; यू0पी0 में प्रधान मंत्री का चुनाव (1937); जवाहरलाल नेहरू और दूसरे नेता गण ; जवाहरलाल नेहरू गांधी जी के उत्तराधिकारी ; जवाहरलाल नेहरू का मूल्यांकन ; गांधी जी ; जवाहरलाल नेहरू और योजनाएं ; सरदार पटेल, मौलाना आजाद और पन्त जी ।

नेहरु स्मारक संग्रहालय एवं लाईब्रेरी

मौखिक इतिहास इन्टरव्यू

श्री चन्द्र भानु गुप्ता

लखनऊ : 14-2-71

श्री श्याम लाल मनचन्दा द्वारा

***

श्री श्याम लाल मनचन्दा :- गुप्ता जी, आप यह बतायेंगें कि पहले-पहल कब और कैसे आपकी जवाहरलाल जी से मुलाकात हुई ?

श्री चन्द्र भानु गुप्ता :- जहां तक जवाहरलाल जी से मुलाकात होने का प्रश्न है वह तो 1925 में नजदीक से हुई जब काकोरी-कांड इस प्रदेश में हुआ और जब पंडित जवाहरलाल नेहरु और उनके पिता उन व्यक्तियों को जो कि उस कांड में पकड़े गये थे उनके मुकद्मे के सिलसिले में तथा डिफेन्स के लिये लखनऊ आये थे । वैसे उनसे मेरी पहले भी मुलाकात हुई थी ।

मनचन्दा:- उस समय आपके ऊपर उनके व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा ?

गुप्ता :- जहां तक उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का विषय है, उनका व्यक्तित्व मेरे ऊपर पहले से ही असर डाल चुका था और जब उनसे उस समय भेंट हुई तो उसने और भी उस दिशा में असर डाला जिस दिशा में नवयुवकों पर ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व का असर होना चाहिये ।

मनचन्दा :- जवाहरलाल जी सन् 1927 में जब सोवियत यूनियन से वापस आये उससे पहले आप उनसे सन् 1925 में मिल चुके थे । आपने उनके अन्दर उस वक्त क्या फर्क देखा ?

गुप्ता :- वैसे तो पहले भी जवाहरलाल जी के ऊपर विदेशी सभ्यता का काफि मात्रा में असर था और जब वे सोवियत यूनियन से लौट कर आये तो वह काफी मात्रा में उन विचारों से प्रेरित थे जो कि विचार उस समय विदेशों

में उत्तरोत्तर फैल रहे थे और उन विचारों के कारण एक आध स्थान पर एक अद्भुत क्रान्ति हुई थी, जिससे प्रत्येक देशवासी नव युवक के हृदय में आजाद होने की तमन्ना जागृत हुई थी।

मनचन्दा :- जब जवाहरलाल जी वापस आये तो उस वक्त उनके अन्दर कुछ नये ख्यालात थे, समाजवाद के बारे में। उन्होंने रूस के अन्दर पंच-वर्षीय योजना या दूसरी साम्यवादी योजनाएं वगैरह देखी जो देश को तरक्की की राह पर ले जाती हैं। उस वक्त वे गांधी जी की विचार धारा से कहां तक भिन्न थे ?

गुप्ता :- जहां तक उनके विचार पंच-वर्षीय योजना इत्यादि के सम्बंध में थे, उनका असर तो उनके ऊपर था किन्तु उन विचारों ने उस समय तक असली रूप धारण नहीं किया था। उस समय तो वे उस विचार से प्रेरित थे जो विचार देश के नेताओं को घेरे हुए था और वह विचार था देश में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का, जिसका नेतृत्व जहां जवाहरलाल जी करते थे वहां सुभाष चन्द्र बोस भी कर रहे थे। उन्होंने, सुभाष चन्द्र बोस ने और अन्य नव-युवक नेताओं ने 'इन्डिपेन्डेन्स आफ इन्डिया लीग' की स्थापना की थी और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति का नारा जगह-2 पर लीग के द्वारा तथा कांग्रेस के माध्यम से दिया तथा उन विचारों से देशवासियों को जगह-2 पर जागरूक और प्रोत्साहित किया।

मनचन्दा :- 'इन्डिपेन्डेन्स आफ इन्डिया लीग' की ब्रांच जो लखनऊ में खोली गई थी आपका उससे कोई सम्बंध था ?

गुप्ता :- यहां उसकी कोई शाखा तो नहीं खोली थी, उस रूप में जिस रूप से कलकत्ते और बम्बई इत्यादि में खोलीं थी, परन्तु हम कुछ नवयुवक गण थोड़ी बहुत एक कमेटी के रूप में उन विचारों का प्रतिपादन करते थे और जनता में अपने विचारों को फैलाने की चेष्टा करते थे।

मनचन्दा :- जब शुरू-2 में किसान आन्दोलन यू0पी0 में चला उसमें जवाहरलाल जी ने भी भाग लिया और एक दफा वे प्रतापगढ़ के पास पकड़े भी गये थे।

गुप्ता :- जवाहरलाल जी प्रारम्भ से ही, जब से गांधी जी का असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ था, उन विचारों के पोषक रहे थे जिनके द्वारा किसानों की समस्यायें हल की जायें । बाबा रामचन्द्र जी किसानों के एक प्रमुख नेता इस प्रदेश में थे और जिन्होंने रायबरेली, प्रतापगढ़ और सुलतानपुर के जिलों में किसानों के बीच में बहुत बड़ा कार्य किया था और किसानों को जगाया था । उनको मदद देने वालों में, उनको प्रोत्साहन देने वालों में, प्रेरणा देने वालों में जवाहरलाल जी का नाम एक प्रमुख नाम है । जहां पुरुषोत्तम दास टण्डन जी ने किसान सभा की रचना करके उस कार्य को एक संस्था का रूप प्रदान किया वहां जवाहरलाल जी ने अपने भाषणों के द्वारा और अपने व्यक्तित्व के द्वारा किसानों में एक नई जान, अपने अधिकारों की प्राप्ति के सिलसिले में डाली । यह उनका कदम वह कदम था जो आगे आने वाले वर्षों में 'एग्रेरियन रिवोल्यूशन' की दिशा में प्रदेश के किसानों को ले गया और जिसने करबन्दी इत्यादि आन्दोलनों को चलाने के लिये लाखों किसानों को जेलखाने जाने के लिए प्रेरित किया । जवाहरलाल जी का किसानों के प्रति सदैव मोह रहा - उनकी सेवा करने का, उनकी दरिद्रता दूर करने का और उनको उनके अधिकार दिलाने की दिशा में कार्य करना, जवाहरलाल जी के जीवन का एक प्रमुख कार्य रहा और उसमें सदैव वे अगुआ के रूप में हम सब लोगों के बीच में कार्य करते रहे ।

मनचन्दा :- इस सिलसिले में आप यह बतायेंगे कि जवाहरलाल जी एक जन-नेता के रूप में कहां तक सफल हुए ?

गुप्ता :- जवाहरलाल जी का जहां तक किसानों को जागृत करने की दिशा में जो दृष्टिकोण रहा उस दृष्टिकोण को अपनाने से उन्हें भारी मात्रा में सफलता मिली । वे जनता के प्रतीक सदैव बनकर रहे और उन्होंने जन-जागरण में सदैव आग्रणी रहकर हिस्सा लिया । वे सफल जन-नायक के रूप में हमारी नजरों के सामने से उस समय गुजर रहे थे ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, सन् 1929 में, लाहौर में जो कांग्रेस अधिवेशन हुआ

था जिसमें पहले-पहल पूर्ण-स्वराज्य का प्रस्ताव पास किया गया था, उसके बारे में आप कुछ बतायेंगे ?

गुप्ता :- जवाहरलाल जी ने और सुभाष बाबू चन्द्र बोस जी ने 'इन्डिपेन्डेंस आफ इंडिया लीग' की स्थापना करके इस विचार को कि हमें पूर्ण स्वराज प्राप्त करना चाहिये और अपने को 'ब्रिटिश कामनवेल्थ' या 'ब्रिटिश एम्पायर' से अलहदा करना चाहिये, जनता में बहुत तेजी के साथ दो वर्षों के बीच में फैलाया गया और जब आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में सुभाष बाबू और उनके साथियों ने पूर्ण स्वराज प्राप्ति के विषय में प्रस्ताव रखा था तो जवाहरलाल जी भी उन वक्ताओं में से थे जो उनका समर्थन करते थे और उन्होंने अपने सभापति के भाषण में उसकी चर्चा भी की थी और उस पर जोर भी दिया था। उन्होंने और सुभाष बाबू ने, इन दोनों वक्ताओं ने, पूर्ण स्वराज प्राप्ति की मांग को सबसे पहले कांग्रेस के मंच से उठाया था।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, सन् 1928 के अन्दर जो कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर सरकार डमिन्यनस्टेट्स हमें दे दे तो हम पूर्ण स्वराज की मांग नहीं करेंगे। सन् 1929 में जब यह पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास हुआ उसके बाद भी यह 'रिकार्ड' पर है कि गांधी जी उस प्रस्ताव के पास होने के बावजूद भी डमिन्यनस्टेट्स लेने के हक में थे, उसके बारे में आपके क्या विचार हैं ?

गुप्ता :- मैं दुर्भाग्य से सन् 1928 की कांग्रेस में कलकत्ता नहीं जा पाया था। यहां लखनऊ में म्युनिसिपल चुनाव चल रहे थे, और कांग्रेस पार्टी ने मुझे चुनाव में एक वार्ड से खड़ा कर दिया था। इस कारण से मैं कलकत्ते की कांग्रेस में तो जा नहीं पाया था। और सन् 1929 की कांग्रेस में जैसा

मैंने अभी बताया, मैं गया था । गांधी जी ने, जब प्रस्ताव पास भी हो गया और अपने विचार उस प्रकार के रखे जिस प्रकार के अभी आपने दोहराये हैं तब भी नवयुवकों में विचार यही रहा कि हमें 'ब्रिटिश एम्पायर' से अलहदा होना चाहिये और अपनी पूर्ण स्वराज की प्राप्ति की मांग को बराबर जारी रखना चाहिये । उसमें कुछ ऐसे व्यक्ति थे जोकि इस बात से सहमत नहीं थे और जो गांधी जी के जो विचार थे उससे सहमति प्रकट करते थे । परन्तु कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के बहुत से साथी तथा और वे साथी जो कि सुभाष बाबू के साथ कार्य कर रहे थे, वे अपनी उसी बात को बराबर दोहराते रहे जिसकी चर्चा सन् 1929 के कांग्रेस के अधिवेशन में की गई थी ।

मनचन्दा :- जैसा आपने अभी बताया कि सुभाष चन्द्र बोस ने पूर्ण स्वराज के हक में प्रस्ताव किया और जवाहरलाल जी ने भी किया तो क्या यह कहना सही नहीं होगा कि जवाहरलाल जी उतने ही 'इनर्जेटिक' थे और वही चाहते थे जैसा सुभाष चाहते थे ?

गुप्ता :- हां, यह बिल्कुल सही है । जवाहरलाल जी में पूर्ण स्वराज की उतनी ही उत्कण्ठा थी जितनी सुभाष बाबू में थी । उन्हें उतना ही उत्साह उस विषय के प्रसार में था, जितना कि सुभाष बाबू में । अन्तर दोनों में इतना ही था कि एक व्यक्ति गांधी जी की बातों को सुनकर गांधी जी से प्रभावित हो जाता था । दूसरा व्यक्ति गांधी जी की बातों को सुनकर उन पर उसी रूप में अमल करने के लिए उद्यत नहीं होता था जिस मात्रा में दूसरा व्यक्ति अपने विचारों को बदलने के लिए उद्यत हो जाता था । यही दोनों में फर्क था ।

मनचन्दा :- उस वक्त आपको याद होगा कि यही दो नौजवान नेता, जवाहरलाल नेहरु और सुभाष बाबू, एक दूसरी पंक्ति के नेता निकल रहे थे, गांधी जी के बाद और दोनों के व्यक्तित्व में थोड़ा सा 'रोमांटिक टच' था

जो कि नौजवानों को अपनी तरफ खींचता था और जवाहरलाल जी साफ समाजवादी विचारों का प्रचार करते थे । अगर हम उस समय का इतिहास देखें तो हमें यह मालूम होता है कि हर नौजवान सभा में, हर प्रांतीय सभा के अन्दर वे हर मंच पर से समाजवाद का नारा देते थे और सुभाष बाबू का जो ज्यादा जोर था वह आजादी पर था, आप इनदोनों की किस तरह से तुलना करेंगें ?

गुप्ता :- मैं तो उन व्यक्तियों में से था जो जवाहरलाल जी के समाजवादी विचारों से प्रभावित थे और उन साथियों के विचारों से प्रभावित था जो स्वतः जवाहरलाल जी के विचारों से प्रभावित हुए थे । मेरा तात्पर्य आचार्य नेरन्द्र देव जी से है, जयप्रकाश नारायण से है, अशोक मेहता से है और उन अन्य साथियों से है जिन्होंने मिल-जुल कर सन् 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की रचना की थी । जहां तक सुभाष बाबू का सम्बंध रहा वह जैसा मैंने कहा कि वे अपने उस विचार में दृढ़ थे कि अंग्रेज को यहां से किसी न किसी तरह से हटाओ और वे किसी न किसी तरह से हटाने के सम्बंध में जब विचार करते थे तो उनके विचार केवल अहिंसा की सीमा की परिधि में ही बंधे हुए नहीं रहते थे । वे उसके बाहर भी कार्य करने की क्षमता दिखाना चाहते थे और उसी से प्रभावित रह कर वे कभी-2 कार्य कर बैठते थे । जवाहरलाल जी, जिन्होंने कि गांधी जी के बहुत से कार्यों में पूरी मात्रा में सहयोग दिया, गांधी जी के तौर-तरीकों से भी, देश की परिस्थिति को देखकर, प्रभावित होते थे और उसका प्रभाव लेकर परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने की क्षमता दिखाते थे । यही दोनों व्यक्तियों में कार्य करने के विषय में अन्तर था ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, आपको याद होगा कि सन् अप्रैल 1936 में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें जवाहरलाल जी सभापति थे और उन्होंने पहली दफा कांग्रेस के मंच से समाजवाद का नारा दिया जिसके ऊपर वर्किंग कमेटी के कुछ सदस्यों ने त्याग पत्र दिया जिसमें राजा जी थे, कृपलानी जी थे और अन्य नेता थे और यह मामला गांधी जी तक पहुंचा । इसका उस वक्त तक जनता में पता नहीं था कि वर्किंग कमेटी के सदस्यों ने त्याग पत्र

दे दिया । गांधी जी ने इस मामले को सुलझाया, इस घटना पर आप कुछ रोशनी डालेंगे ?

गुप्ता :- यह वाक्या हुआ तो था लेकिन यह अन्दर की ही बात रही थी । यह बाहर प्रकाश में बात नहीं आयी थी और इसलिए जो बात प्रकाश में न आयी हो उसके विषय में चर्चा करना कोई दूर-दर्शिता की बात नहीं है । लेकिन यह सही है ।

मनचन्दा :- अब तो चालीस साल गुजर गये अब यह सारी चीजें छप गयी हैं । उस वक्त की बात कर रहा था ।

गुप्ता :- मैं तो जवाहरलाल के साथ था । मेरे विचार तो समाजवादी विचार थे । मैं तो कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का उत्तर प्रदेश में जनरल सेक्रेटरी था सन् 1934 से और मैं तो उन विचारों से प्रभावित रहा । ताज्जुब मुझे यही रहा कि हम लोग जिन्होंने कि कांग्रेस के अन्दर रहकर कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की उसमें स्वतः जवाहरलाल जी भी सम्मिलित नहीं हुए और सरदार पटेल और उनके अन्य साथी, हम लोग जो कि कांग्रेस समाजवादी दल के थे, उनके प्रति वह दृष्टिकोण नहीं रखते रहे जो कि कांग्रेस के सदस्य के प्रति रखना चाहिये । जवाहरलाल जी यद्यपि कांग्रेस समाजवादियों के प्रति सहानुभूति रखते थे परन्तु बहुत से मौकों पर वर्किंग कमेटी के अन्तर्गत बहुत सी अन्य बातों को वे अपनाने में या उसका समर्थन करने में समर्थ नहीं हुए जिन्हें कांग्रेस का समाजवादी दल प्रस्तुत करता था ।

मनचन्दा :- इस वाक्या के बाद सन् 1936 के आखिर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, यह कहा जाता है, बहुत से इतिहासकार यह कहते हैं कि जो जोश जवाहरलाल में समाजवाद के लिए था, अप्रैल के अन्दर, वह दिसम्बर के अन्दर उतना नही रहा । हो सकता है कि इसका असर यह कांग्रेस वर्किंग कमेटी

के अन्दर जो होता हो उसके कारण हो । आपने कुछ ऐसा परिवर्तन उस वक्त देखा ?

गुप्ता :- नहीं, मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकता । न मैंने उस समय की परिस्थितियों का इस प्रकार से अध्ययन किया है । क्योंकि जब-2 हमारे प्रदेश में भी इस विषय के प्रस्ताव रहे तो कभी उन प्रस्तावों के विषय में उन्होंने कम जोश दिखाया हो मैं ऐसी बात नहीं मानता । अब राजनैतिक स्तर की क्या परिस्थितियां थी, वे परिस्थितियां अवश्य ऐसी रहीं है कि जिनमें उनका दृष्टिकोण अवश्य बदला होगा । एक तो यही विषय रहा कि सुभाष बाबू हरिपुरा कांग्रेस में चुने गये, सभापति । वे एक साल तक सभापति रहे और फिर बाद में त्रिपुरी में भी वे एक साल के लिए सभापति चुने गये । उस समय गांधी जी को उनका चुनाव पंसद नहीं आया । जवाहरलाल जी ने गांधी जी का समर्थन किया और लोगों ने भी उनका समर्थन किया और कुछ हमारे समाजवादी भाई जिन्होंने उनको चुनवाया था वे उस विषय में गांधी जी के कारण और जवाहरलाल जी के कारण 'न्यूट्रल' हो गये । तो अवश्य ऐसा लगता है कि या तो कोई व्यक्तिगत बात हुई हो या कोई तौर-तरीका रहा हो सुभाष बाबू का, जिससे वे प्रभावित न रहे हों और इस कारण से उन्होंने उस दिशा में यह कदम उठाया हो । तो उसी सिलसिले में अगर यह समझा जाये किजो इतने अभिन्न मित्र बनकर रहे थे वे कैसे जाकर त्रिपुरी में इस प्रकार से बदल गये और कैसे उन्होंने पंडित गोविंद बल्लभ पंत के प्रस्ताव पर अपना मत दिया ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, आप शुरु से समाजवादी दल जो कांग्रेस के अन्दर था जिसको कांग्रेस समाजवादी दल के नाम से हम कहते हैं, के मेम्बर रहे । आप यह बताईये कि उसकी जो विचारधारा थी उसका कांग्रेस के मेम्बरों पर कैसा असर पड़ा खास तौर पर उत्तर प्रदेश में ?

<u>गुप्ता :-</u> उत्तर प्रदेश में तो कांग्रेस-जन उस विचारधारा से भारी मात्रा में प्रभावित थे और यदि हमारे साथी-गण सन् 1948 में कांग्रेस से बाहर न गये होते तो आने वाले वर्षों में अब उनकी नीतियां और उनके विचार अधिक प्रभावशाली बन कर कांग्रेस में रहते और जो-2 नीतियां कांग्रेस ने समय-2 पर अपनायीं उनका काफी मात्रा में श्रेय कांग्रेस समाजवादी दल के लिये कहा जा सकता है।

<u>मनचन्दा :-</u> समाजवादी दल जो कांग्रेस में था उसका एक यह भी प्रोग्राम था कि सन् 1937 के चुनावों को न लड़ा जाये और पदों को स्वीकार न किया जाये। उसका मेरे ख्याल में कांग्रेस पार्टी पर यू0पी0 में कोई असर नहीं पड़ा। इसके बावजूद कांग्रेस ने चुनाव लड़ा और मंत्री-मण्डल भी बनाया उसके बारे में आप कुछ रोशनी डालेंगें ?

<u>गुप्ता :-</u> चुनाव न लड़ने की बात तो जहां तक मुझे याद है कांग्रेस समाजवादी दल ने तय नहीं की। कांग्रेस समाजवादी दल के मंत्री-मंडल में जाने के विषय में अवश्य प्रतिबंध लगाया और उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस के समाजवादी साथी और प्रदेशों में जहां उनसे कहा होगा मुझे उसका ज्ञान तो नहीं है, वहां उन्होंने पद स्वीकार नहीं किया। केवल सन् 1938 में जाकर जब यहां एक व्यक्ति जो कि मंत्री परिषद् में थे वे मंत्री परिषद् से हटे और जगह खाली हुई तो मेरे एक साथी ने मंत्री मण्डल में जाना स्वीकार किया और वे भी उन व्यक्तियों में से थे और मैं भी उन व्यक्तियों में से था जो ऐसा नहीं मानते थे कि जब हम धारा सभाओं में गये हैं तो हमें मंत्री परिषद् में नहीं जाना चाहिये। ऐसी बात हम नहीं मानते थे। लेकिन मैं तो उसमें गया नहीं। साल भर के बाद या डेढ़ साल के बाद एक जगह खाली हुई तब वे उसमें शिक्षा मंत्री के रूप मेंगये।

<u>मनचन्दा :-</u> जब पंत जी को मुख्य मंत्री बनाया गया उस वक्त यह ख्याल किया जाता था कि पुरूषोत्तम दास टण्डन चूंकि पुराने नेता हैं उनको शायद मुख्यमंत्री बनाया जाये तो उसमें आप जरा रोशनी डालेंगें ?

<u>गुप्ता</u> :- जहाँ तक मुझे ज्ञान है यह बात सही है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू, बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन के बारे में यह राय रखते थे कि वे अधिक प्रगतिशील हैं और वे उनके विषय में इसलिए ऐसा समझते थे कि वहीं व्यक्ति थे जिन्होंने किसानों के बीच में अधिक कार्य किया था । उनकी अधिक सेवायें की थी और उनकी समस्याओं से लड़ने और भिड़ने के लिए सदैव वे उद्धत रहते हैं । इस कारण से जैसी मेरी जानकारी है वे चाहते थे कि बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने । परन्तु उस समय फैसला यू0पी0 की कांग्रेस की कार्यकारिणी को करना था उसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव जी थे और जनरल सेक्रेटरी बाबू सम्पूर्णानन्द जी थे । उपाध्यक्ष कदाचित रफी अहमद किदवाई थे । ऐसी जानकारी मेरी उस दिन हुई कि इन तीनों व्यक्तियों ने एक रात्रि पूर्व जब कि कौंसिल को फैसला करना था यह फैसला किया कि पंडित गोविन्द बल्लभ पंत ही प्रदेश के मुख्यमंत्री बनाये जायें । जवाहरलाल जी और मैं बैठक में अवश्य थे और मेरी मौजूदगी में यह फैसला हुआ । दूसरा नाम किन्हीं कारणों से, किन्ही वजहों से शायद पेश न हो सका और इस कारण से पंडित गोविन्द बल्लभ पंत एक मत से कौंसिल के अधिवेशन में मनोनीत मुख्यमंत्री किए गये ।

<u>प्रश्न</u> :- आप जवाहरलाल जी को उस समय के दूसरे नेताओं से कैसे 'कम्पेयर' करेंगें ? मिसाल के तौर परगांधी जी से जो कि बहुत उनसे ऊँचे थे, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू और दूसरे नेताओं से ?

<u>गुप्ता</u> :- राजेन्द्र बाबू, सरदार पटेल और नेहरू जी हमारे राष्ट्रीय इतिहास में अपनी-2 जगह पर अपना-2 महत्व पूर्ण स्थान रखते हैं । जहां जवाहरलाल नेहरू ने नवयुवकों को जोश दिलाया, नवयुवकों को प्रेरणा प्रदान की, प्रोत्साहन दिया, वहां गांधी जी की उन प्रवृत्तियों को जिन्होंने देश की राजनीति को एक नया स्वरूप प्रदान किया राजेन्द्र बाबू ने और सरदार पटेल ने देश में फैलाने की दिशा में वे कदम उठाये जो किसी भी एक ऐसे व्यक्ति को जो कि महान व्यक्ति का अनुयायी हो उठाना चाहिए था । जवाहरलाल जी

आदर्शवादी थे, सरदार पटेल व्यवहारिकता के पंडित थे । वे हर चीज को व्यवहारिकता की कसोटी पर तोलते थे । राजेन्द्र बाबू उन मान्यताओं की कसोटी पर हर प्रश्न को तोलते थे जिन मान्यताओं को उन्होंने अपने जीवन का हिस्सा बनाया था ओर जिन मान्यताओं ओर आस्थाओं के बीच में वे पले थे। तीनों ये महान देश की विभूतियां अपने-2 क्षेत्र में उन सेवाओं से भरी पड़ी हैं जिन सेवाओं के कारण यह देश वह दिशायें पकड़ सका है जिन्हें पकड़ कर उत्तरोत्तर यह प्रगति कर सका है ओर देश को आजाद करा पाया है । जवाहरलाल जी में थोड़ी बहुत मात्रा में उच्छृंखलता थी । राजेन्द्र बाबू में अधिकांशतः प्रत्येक प्रश्न के मन्न करने में ओर ग्रहण करने में भारी मात्रा में संजीदगी ओर सरदार पटेल में हर चीज में ओर हर चीज को हल करने में व्यवहारिक दृष्टिकोण की प्राथमिकता थी । ये महान विभूतियां देश के प्रत्येक क्षेत्र के व्यक्तियों को जागृत करती रहेंगी, आने वाले वर्षों में, ऐसी मेरी कामना, अभिलाषा ओर आकांक्षा है ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, जब देश आजाद हुआ सन् 1947 में, उससे पहले भी आल इंडिया/कांग्रेस कमेटी के बहुत से मेम्बरों की यह राय थी कि सरदार पटेल को प्रधान मंत्री बनाया जाये चूंकि गांधी जी ने नेहरु जी को अपना राजनैतिक वारिस बनाया था ओर उन्हीं को प्रधान मंत्री बनाना पड़ा । इस सिलसिले में आप कुछ जानते हो तो बताईयें ?

गुप्ता :- अन्दर की बात तो मैं नहीं जानता हूं लेकिन यह बात अवश्य मैं जानता हूं कि जहां तक कांग्रेस के संगठन का सम्बंध था अधिकांशतः व्यक्ति संगठन के अन्दर सरदार पटेल से सम्बंध रखते थे परन्तु गांधी जी दूरदर्शी व्यक्ति थे ओर वे कल देश में क्या होना चाहिये ओर देश को क्या दिशायें पकड़नी चाहिये उनको भी भली भांति समझते थे । ओर यह भी जानते थे कि जवाहरलाल जी नवयुवकों को अधिक सांत्वना दे सकते हैं, अधिक उनके आदर्शों की पूर्ति कर सकते हैं ओर उनके विश्वासों को देश के अन्दर फेलाने में समर्थन प्राप्त हो सकता है, इस कारण से उन्होंने दोनों के बीच में, दोनों की उमरों को भी देखते हुए कदाचित निर्णय ले लिया कि देश के भविष्य का

निर्माता, जो प्रधान मंत्री बनेगा, वह पंडित जवाहरलाल नेहरू ही होने चाहिए ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी आप गांधी जी के कोई संस्मरण दीजिये ?

गुप्ता :- मैं तो उन अभागे व्यक्तियों में रहा हूं जो गांधी जी के सम्पर्क में बहुत कम रहे है । सन् 1936 के कांग्रेस के अधिवेशन में वे आये थे, मुझे उनके बीच में दो-चार रोज कुछ घन्टों के लिए उस समय रहने का अवसर मिला था और उस समय जो दिनचर्य्या मैंने उनकी देखी थी, उनके कार्य करने की शैली देखी थी और समय की जो पाबन्दी देखी थी वह ऐसी थी जो किसी भी सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिए एक ऐसी हो सकती है जो इतनी चीजों से घिरा रहने पर भी सदैव के लिए सराहनीय ही रहेगा । और जहां तक उनके विश्वासों और उनकी धारणाओं और उनकी आस्थाओं का सम्बंध है उसमें तो बहुत सी ऐसी बातें हैं जो कि प्रत्येक के आचरण को सुधार सकती है और प्रत्येक को उन बातों के करने के लिए बाध्य कर सकती हैं जिनसे मानव अपने स्तर को ऊंचा उठा सकता है ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, आप जवाहरलाल जी को कैसे सम-अप करेंगें as an Administrator, as a Politician, as a Statesman, as a Foreign Minister क्योंकि आपका उनसे काफी नजदीक का रिश्ता रहा ।

गुप्ता :- जवाहरलाल जी आदर्शवादी थे, शान्ति-प्रिय थे और पीड़ित मानवता की सदैव सेवा की भावना से ओत-प्रोत रहते थे और हर जगह जहां मानव पीड़ित हो उसकी सहायता के लिए उत्सुकता प्रदर्शित करते थे परन्तु कान के भी कच्चे थे । मैं जब कान के कच्चे की बात करता हूं तो कभी-2 वे बातें मेरी नजरों के सामने आ जाती हैं जिनका स्वतः मैं शिकार हुआ हूं । इन बातों का ब्योरा मैं इस समय नहीं देना चाहता हूं परन्तु यह अवश्य कहना चाहता हूं कि इस कमजोरी के रहते हुए भी जब तथ्य उनकी नजरों के सामने से गुजर जाते थे तो वे अपनी बातों को बदलते भी थे और बदल कर अपने आचरण से यह सिद्ध करते थे कि जो पुरानी बात

उन्होंने अपने मन में बैठा रखी थी वे उसे भुला भी सकते हैं । वे हठी नहीं थे । वे दूसरों की बात सुनकर अपनी बात को बदलने के लिए भी तैयार रहते थे और सदैव वे एक 'डेमोक्रेट' के रूप में कार्य करना चाहते थे ।

जहां तक उनके एक विदेश मंत्री के रूप में कार्य करने का विषय रहा उन्होंने विदेश मंत्री के रूप में इस देश के प्रश्नों को संसार के देशों तक पहुंचाने में अगवाही तो की ही परन्तु इस देश की नीतियों को संसार के पिछड़े हुए देशों तक पहुंचाने में बहुत बड़ाकार्य किया जिसके कारण जो हमारी ही तरह से पिछड़े हुए देश थे उन्हें उठने और उभरने का मौका मिला और वह नई क्रांति जो हमने अपने इस युग में देखी उन देशों में वह क्रांति काफी मात्रा में जगह-2 परउनके विचारों की देन रही है, उनकी नीतियों की देन रही है और इस युग में उन्होंने विदेश मंत्री के रूप में विदेशों के अन्दर भारत के इतिहास और संस्कृति की पृष्ठभूमि को संसार के देशों में फैलाने का एक प्रमुख कार्य किया है ।

मनचन्दा :- 'रेज ए पार्टी लीडर'?

गुप्ता :- जहां तक पंडित जवाहरलाल नेहरू के पार्टी लीडर होने का विषय है, पंडित जवाहरलाल नेहरू में पार्टी लीडर के रूप में वह कठोरता नहीं थी जो कठोरता पार्टी लीडर के रूप में सरदार पटेल में थी । सरदार बल्लभभाई पटेल जो व्यक्ति कांग्रेस के अनुशासन के विरूद्ध कार्य करते थे उनके प्रति कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने को तैयार थे । परन्तु जवाहरलाल जी ऐसे व्यक्तियों के प्रति कभी-2 मुलामियत भी बरतते थे और मुलामियत बरतने के कारण उस कठोरता का परिचय नहीं देते थे जो कठोरता पार्टी लीडर के नाते, कभी-2 अनुशासन को निभाने के लिए व्यक्ति को बरतनी चाहिये ।

मनचन्दा :- इस सिलसिले में गुप्ता जी मैं आपको याद दिलाऊं कि रफी अहमद किदवाई जब कांग्रेस छोड़कर दूसरा दल उन्होंने बनाया उसके बाद जवाहरलाल जी ने उनको केन्द्र में खाद्य मंत्री भी बनाया तो आप यह बतायेंगे कि जवाहरलाल जी का रफी अहमद किदवाई और/ऐसे लोगों के साथ वर्ताव कैसा था ?

गुप्ता :- पार्टी लीडर के नाते उन्होंने उन व्यक्तियों के प्रति जिन्होंने कांग्रेस के विरुद्ध कार्य किए थे, जिन्होंने कांग्रेस के नेताओं के विरुद्ध गलत आवाजें उठायीं थीं उनके प्रति जो व्यवहार बाद में किया वह व्यवहार इस बात को सिद्ध करता है कि उनमें वह कठोरता नहीं थी । उन्होंने जो व्यवहार केशव देव मालवीय के प्रति, जो व्यवहार रफी अहमद किदवाई के प्रति बरता वह इस बात का द्योतक है कि जो मैं कह रहा हूं उसमें कितनी सार्थिकता है ।

मनचन्दा :- एक और प्रश्न है, गुप्ता जी, आजादी के बाद जवाहरलाल जी ने कुछ योजनाएं चलायी जिसको मिश्रित अर्थ नीति का नाम दिया जाता है । वे समाजवाद को प्रजातांत्रिक रास्तें से लाना चाहते थे । आपके अपने क्या विचार हैं ?

गुप्ता :- जहां तक प्लानिंग का विषय है और जिसके चलाने वाले और अगुआ जवाहरलाल जी रहे हैं उसके विषय में जो दृष्टिकोण उन्होंने देश की परिस्थितियों को समझते हुए अपनाया था और अपनाकर जो 'इंडस्ट्रियल पालिसी रिजोल्यूशन' पास करवाया था वह इस बात का द्योतक रहा है कि वे जो 'रिलीटिज सिचूएशन' की है उसको भी अच्छी तरह से समझते थे केवल वे 'आइडिआलाजिकल वारफेयर' में ही हिस्सा नहीं लेते थे परन्तु 'आइडिलाजि' के पीछे जो 'रियलटि' भी होनी चाहियें उसको समझ कर कार्य करते थे । इसलिए जो कार्य इस देश के अन्दर "इंडस्ट्रियल रिजोल्यूशन' के सिलसिले में और 'इंडूस्ट्रीयल पालिसी' के बरतने के सिलसिले में बरता गया उसमें यही नीति अपनायी गई कि 'बेसिक इंडूस्ट्रीज' का तो राष्ट्रीयकरण हो परन्तु कुछ ऐसे उद्योग धन्धे भी देश में रहे जो कि 'प्राईवेट सेक्टर' के तहत में चलें और वह नीति अभी तक देश के अन्दर बरती जा रही है । जहां तक स्वतः मेरा विचार है, मैं देश के सारे उद्योग-धन्धों, सारे उद्योग-धन्धों से मेरा तात्पर्य छोटे-2 उद्योग-धन्धों से भी है वे सब राज्य के द्वारा ही चलाये जायें, मैं इसको नहीं मानता । छोटे-2 उद्योग-धन्धे, छोटे-2 आदमी हैं, वे उनके हाथ में रहें ऐसी नीति को मैं मानता हूं और उसी नीति को मानकर जो

प्रस्ताव हमारा पहले रहा है उसको मानता हूं । बड़े-2 उद्धोग-धन्धे जो कि पूंजीवाद को लाते हैं और जिससे पूंजीवाद को वृद्धि मिलती है उनका राष्ट्रीयकरण हो, ऐसी मेरी विचारधारा है । और उसके अनुसार मैं देश में नीतियों को बरतने के लिए अपनी राय रखता हूं और राय देता हूं ।

मनचन्दा :- जवाहरलाल नेहरु भारत के प्रधान मंत्री सत्तरह वर्ष तक रहे सन् 1947 से 1964 तक । आप यह बतायेंगे कि 'ऐज ऐन एडमीनिस्ट्रेटर' वे किस हद तक कामयाब रहे ?

गुप्ता :- पंडित जवाहरलाल जी ने देश के प्रदेशों में और देश के अन्य क्षेत्रों में जो कार्य किया उससे देशवासियों को बहुत सी दिशायें पकड़ने का मौका मिला । कई में देशवासियों ने प्रगति की और कई में देश की कमियों और कमजोरियों को हमारी नजरों से ओझल किया । परन्तु कई ऐसी चीजें भी हैं जो कि जवाहरलाल जी के जमाने से हमें कमजोरी की दिशा में ले जा रही हैं । हमने देश में भाषावार प्रांत की कल्पना दूसरे देशों के इतिहास को अपनी नजरों के सामने रखकर जो कि उसमें हमें कुछ कमियां महसूस हुई हैं । उन्होंने जगह-2 पर संकीर्णतायें पैदा की हैं और वे संकीर्णतायें इस कारण से हुई कि जवाहरलाल जी के कार्यकाल में जो हमने प्रस्ताव स्वीकार किए कि हिन्दी के विषय में जो राष्ट्रभाषा का रुप हमने अख्तयार कराया था वह हम पूरी मात्रा में [illegible] कार्यान्वित नहीं कर सके और भाषावार प्रान्त की स्थापना ने उस एक राष्ट्रभाषा की कल्पना को हमारी नजरों से ओझल सा कर दिया । जगह-2 पर राष्ट्रभाषा के नाम पर आज जो भाषा प्रसारित होनी चाहिये थी वह प्रसारित नहीं हो पायी है और इस कारण से उस मात्रा में जवाहरलाल जी का शासन कमजोरी का धोतक रहा है । यदि पं० जवाहरलाल जी राष्ट्रभाषा को अपने कार्यकाल में लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके, लोगों के सहयोग से चला देते तो राष्ट्र में जो संकीर्णतायें बाद में उत्पन्न हुई हैं और आज भी होती जा रही है वे संकीर्णतायें हमें देखने को न मिलती और हम ज्यादा एकता के धागे में बंधे हुए दिखाई पड़ते ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, आप कुछ मौलाना आजाद के बारे में बतायेंगे ? आपकी उनसे मुलाकात हुई हो ?

गुप्ता :- मौलाना साहिब के मैं तो नजदीक रहा नहीं । थोड़ी-बहुत जानकारी समय-2 पर जब मैं शासन में रहा और जब उन सम्मेलनों में मेरी उनकी भेंट हुई जिनमें मुझे शासन की ओर से जाना पड़ता था और उनकी बातों को और भाषणों के सुनने का जब मुझे मौका मिलता था, तो प्रश्नों के विषय में जिस गम्भीरता से वे अपना विचार व्यक्त करते थे वह गम्भीरता, उनके विचार हम सबको प्रभावित करते थे और उससे कभी-2 कांग्रेस के संगठन की जब गम्भीर समस्यायें उत्पन्न भी होती थी तो उनके निवारण में हम सबको मद्द भी मिलती थी और उन्होंने समय-2 पर उनके निवारण करने में मद्द भी पहुंचायी ।

मनचन्दा :- सरदार पटेल के बारे में आप कुछ बतायेंगें ?

गुप्ता :- मैं तो सरदार पटेल के विषय में बता चुका हूं कि वे अधिक व्यवहारिक व्यक्ति थे । उन्होंने किसानों के बीच में बारदोली और खेड़ा इत्यादि में बहुत बड़ा कार्य किया था ।

मनचन्दा :- गुप्ता जी, आपने बहुत अर्से तक पंत जी के साथ काम किया, उनके बारेमें आप अपने विचार बतायें ?

गुप्ता :- पंत जी हमारे प्रदेश के पिछली पीढ़ी के उन व्यक्तियों में से रहे हैं जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी विचारों केअनुकूल उन क्षेत्रों में सबसे ज्यादा कार्य किया है जिन क्षेत्रों में वे कार्य करने में अधिक क्षमता रखते थे । वे 'पार्लियामेंटेरियन थे और पार्लियामेंटेरियन' के रूप में असेम्बली कौंसिल और पार्लियामेंट में योग्यता से कार्य कर सकते थे । उनकी भाषण शैली अपूर्व थीऔर वे जब बोलते थे, किसी विषय की चर्चा असेम्बली में या पार्लियामेंट में करते थे तो जो उनके विरोधी पक्ष में बोलता था उसको केवल अपने विचारों के अनुकूल सोचने के लिए ही प्रभावित नहीं करते थे परन्तु अपने विचारों का साथी बनाने की सदैव चेष्टा करते थे । वे व्यक्ति की परख भी काफी मात्रा

में रखते थे और उस पक्ष के अनुकूल चाहे वह अधिकारी वर्ग हो, चाहे वह सार्वजनिक कार्यकर्ता हो, सबसे कार्य लेने की क्षमता अपने अन्दर रखते थे। वे सत्य-प्रिय थे और किसी को नाराज नहीं करते थे। यद्यपि शासन में कभी-2 ऐसे अवसर भी उनके बीच में आये थे कि जब उन्हें कई निर्णय लेने पड़े थे और उन निर्णयों के लेने के सिलसिले में भी उन्होंने उन व्यक्तियों के प्रति जिनसे कि उनकी पटती नहीं थी, कभी कोई दुर्भावना नहीं रखी। वे योग्य शासक रहे और उन्होंने उन परम्पराओं और उन मर्यादाओं की संसदीय जीवन में रक्षा की जिनकी बुनियाद संसदीय जीवन से उभरती है और उठती है और जाग्रत रहती है।